

पाठ 9 प्रकृति और हम

मुख से

क) मनुष्य और प्रकृति का सानिध्य कब से शुरू होता है?

उत्तर- मनुष्य और प्रकृति का सानिध्य मनुष्य के जन्म के साथ ही शुरू हो जाता है।

ख) लोगों ने लेखक की आलोचना किस कारण की है?

उत्तर- प्राकृतिक वातावरण के साथ रहने की इच्छा को पूरा करने के लिए लेखक घूमते थे तथा उसके बारे में लिखते भी थे। इस कारण लोग लेखक की आलोचना करते थे। उनके इस कार्य को समय की बरबादी कहते थे।

ग) लेखक कब घूमने के लिए निकल पड़ते हैं?

उत्तर- लेखक स्वयं को भी पेड़-पत्तों तथा पशु-पक्षियों की तरह एक प्राणी मानते हैं। वह जंगल के वातावरण की प्राकृतिक परिस्थिति के लिए तरसते हैं और जब यह स्थिति असह्य हो जाती है तो वह घूमने के लिए निकल पड़ते हैं।

घ) लेखक को स्वयं के प्रति धन्य होने का भाव कब महसूस होता है?

उत्तर- जब लेखक से ही गढ़ में रहता था, तब पक्षी उसे अपनाते थे तथा उस पर विश्वास करते थे। इस पर लेखक को स्वयं के प्रति धन्य होने का भाव महसूस होता था।

ङ) लेखक को हिमालय पर रहने वाले मनुष्यों और जानवरों को देखकर दुख क्यों होता है?

उत्तर- लेखक को हिमालय पर रहने वाले नाते मनुष्यों और जानवरों को देखकर दुख होता है, क्योंकि इनको हिमालय की कठिन तथा विषम परिस्थिति में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा तथा इनका जीवन विषम हो जाएगा।

कलम से

क) लेखक की प्राकृतिक अनुभूतियों में जाने के पीछे क्या सोच है?

उत्तर- लेखक अपने को भी पेड़- पत्तों और पशु- पक्षियों में से ही एक प्राणी मानता है। उसका सोचना है कि वह भूल से सयाने लोगों के बीच आ गया है। वह कभी-कभी जंगल के वातावरण की प्राकृतिक परिस्थिति के लिए तरस जाता है। जब यह स्थिति काफी असहनीय हो जाती है, तब वह प्राकृतिक अनुभूतियों की प्राप्ति के लिए जंगलों में हो आता है।

ख) दो स्नेही जनों ने उनके बारे में क्या लिखा है? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- दो स्नेही जनों ने लेखक के बारे में लिखा कि काका साहब गंभीर पुरुष, विचारक और नेता हैं। वे अफ्रीका के जंगलों में वहां के जानवरों को देखने के लिए घूमते हैं। अपनी जान जोखिम में डालते हैं तथा अपनी जिंदगी के कीमती दिन बर्बाद करते हैं। इतना ही नहीं, इस धन का व्यवस्थित उत्साह पूर्ण वर्णन करते हुए किताबें भी लिखते हैं। यह कुछ समझ में नहीं आता।

ग) छोटा- सा कृत्रिम बगीचा बनाकर संतुष्ट होने वालों के विषय में लेखक की दृष्टि क्या है?

उत्तर- लेखक की दृष्टि में शहर में रहकर कृत्रिम बगीचा लगाकर संतुष्ट होना तथा यह मानना कि हमने प्रकृति के साथ मेल स्थापित कर लिया है, ठीक नहीं है। ऐसा करना ठीक वैसा ही है, जैसे सवा रुपए या चार आना ब्राह्मण को देकर गोदान का समाधान निकालना। ऐसा करके हम प्रकृति से संबंध नहीं स्थापित कर सकते। इससे संबंध स्थापित करने के लिए हमें उसके बालक जैसा बनना होगा।

घ) मसूरी में बादलों से समकक्षता कब महसूस होती है और क्या इच्छा होती है?

उत्तर- मसूरी में पांच-साथ हजार फुट की ऊंचाई पर जाने के बाद लेखक को यहां के जंगलों के साम्राज्य का उपभोग करने वाले बादलों से समकक्षता महसूस होती है। यहां उसे बादल बनकर पर्वत शिखरों के बीच व्योम- विहार करने की इच्छा होती है।

ङ) बादल कैसा- कैसा रूप धरते हैं? लेखक को बादलों से क्या संदेश मिलता है?

उत्तर- बादल क्षण- क्षण अलग-अलग रूप धरते हैं। यह कभी श्वेत हो जाते हैं, कभी श्याम हो जाते हैं तो कभी वर्ण- विहीन। लेखक को बादलों से संदेश मिलता है कि परिवर्तन से घबराना नहीं चाहिए, बल्कि उस का आनंद लेना चाहिए और बाद में उससे अलग हो जाना चाहिए। यही जीवन- साधना है।
